कटाई बाद प्रबंधनः

- उखाड़े गए पौधे को दो दिन तक धूप में और उसके बाद छाया में सुखाया जाता है।
- उचित रूप से सुखाई गई सामग्री को जूट के बोरों में भरकर अंधेरे, हवादार और नमी रहित स्थानों में भंडारण किया जाता है।
- **बीज का जीवनः** एक वर्ष

उपज

- इसकी उपज (पूरा पौधा) लगभग 2.5 टन/हेक्टे. है।

कालमेघ की खेती

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय
भारत सरकार
तृतीय तल, आयुष भवन, बी ब्लॉक, जी.पी.ओ. काम्पलेक्स,
आई.एन.ए., नई दिल्ली – 110023
दूरभाष : 011-24651825 | फैक्स : 011-24651827
ईमेल : info-nmpb@nic.in | वेबसाइट : www.nmpb.nic.in

नोट – कृषि प्राद्योगिकी का विकास अध्ययन सेंटर फॉर एडवांस्ड स्टडीज इन बॉटनी, यूनिवर्सिटी ऑफ मद्रास, गुइंडी कैम्पस, चेन्नई–600 025 द्वारा किया गया है।

सामान्य नाम	:	कालमेघ
वानस्पतिक नाम	:	एंड्रोग्राफिस पेनिकुलाटा
कुल	:	ऐकेन्थेसी
उपयोगी भाग	:	सूखी पत्तियां और कोमल टहनियां
सामान्य प्रयोग	:	जलन के अहसास, बुखार, खांसी, ब्रोंकाइटिस, त्वचा रोग, आंतों में कृमि, डायरिया, पेचिश इत्यादि में इसका उपयोग होता है।

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय
भारत सरकार

कालमेघ

एंड्रोग्राफिस पेनिकुलाटा
कुल–ऐकेन्थेसी

यह साल भर रहने वाली एक जड़ी–बूटी है। पूरी तरह विकसित होने के लिए इसे 90–100 दिनों की जरूरत होती है। इसके फूलने और फलने का समय अक्टूबर से दिसंबर तक है।

जलवायु और मिट्टी:

- यह पौधा पूरे भारत में उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में उगता है।
- इसे मध्यम उपजाऊ बलुई मिट्टी से लेकर चिकनी मिट्टी में उगाया जा सकता है।

उगाने की सामग्री:

इसे बीजों के माध्यम से आसानी से उगाया जा सकता है।

नर्सरी विधि:

- बीजों को पानी में 24 घंटों तक भिगोया जाता है और सितंबर के आरंभ में क्यारियों में बोया जाता है।
- एक हेक्टेयर में नर्सरी लगाने के लिए करीब 650–750 ग्राम बीजों की जरूरत होती है।
- 1:1:1 के अनुपात में मिट्टी, बालू और जैविक खाद को मिलाकर नर्सरी तैयार की जाती है और 5 सेमी की दूरी के साथ कतारों में बोया जाता है।
- छह सप्ताह के पौधों को खेतों में 30X15 सेमी या 15 X 15 सेमी की दूरी पर रोपा जाता है।
- सीधी बुआई के लिए 1.5 किलो / हेक्टेयर बीज खेत पर छिड़का जाता है।
- नर्सरी की क्यारियों के लिए, आधार खुराक के तौर पर 20 किलो प्रति वर्ग मीटर की दर से उर्वरक दी जाती है।

खेत में रोपण

जमीन की तैयारी और उर्वरक का प्रयोग:

- मिट्टी को भुरभुरा बनाने हेतु बार–बार जुताई करके भूमि तैयार करें।
- आधारभूत उपयोग के तौर पर 20टन / हेक्टेयर की दर से (फार्मयार्ड मेन्योर) उर्वरक डालें।
- अतिरिक्त खुराक हेतु पहली पौधारोपण के चरण में तथा दूसरी पौधारोपण के 40 दिनों के बाद नाइट्रोजनः फोस्फोरसः पोटेशियम (75:75:50 किलो / हेक्टयेर) की दी जाती हैं।
- प्रति हेक्टेयर 5 किलो एजोस्पिरिलियम + 5 किलो फॉस्फोबैक्टीरिया के प्रयोग से अच्छे परिणाम मिलते हैं।

पौधारोपण और दूरी:

- 10 से 25 सेमी लंबे पौधे मुख्य खेत में (बुआई के 6 सप्ताह बाद) पौधे से पौधे और कतार से कतार के बीच 30 X 15 सेमी की दूरी पर रोपे जाते हैं।

सिंचाई:

- फसल कटने तक 4–6 हल्की सिंचाई की जरूरत पड़ती है।

निराई:

- फसल के दौरान पौधारोपण के 20 दिन और 60 दिन पर दो से तीन बार निराई आवश्यक है।

फसल प्रबंधन

फसल पकना और कटाई:

- बुआई के 120 दिनों के बाद फसल तैयार होती है।
- इसकी कटाई तब की जाती है जब अधिकांश पौधे खिले हुए होते हैं।
- कटाई हेतु पूरा पौधा उखाड़ा जा सकता है।
- पौधों को जमीन से 4 से 6 इंच ऊपर काटकर भी कटाई की जा सकती है, ताकि इससे पौधे पुनः बढ़ सकें और पहली कटाई के 50–60 दिनों में दूसरी फसल दे सकें।